अंगूर की बेटी संग जाम में छलकेगी लीची 'रानी'

- लीची से शराब बनाने की तकनीक तैयार, निर्माण का प्रस्ताव
- सरकार की सहमति के बाद बाजार में उपलब्ध होगी वाइन
- देश की पचास फीसद लीची अकेले पैदा कर रहा बिहार

जासं, मुजफ्फरपुर : अब मयखाने में अंगूर की बेटी का अधिपत्य नहीं रहेगा। सबकुछ ठीक रहा तो वहां पर लीची रानी भी जाम में छलकते हुए नजर आएंगी। जाम में अंगूर की बेटी के साथ लीची 'रानी' को शामिल करने की तैयारी पूरी है बस इंतजार है तो केवल सरकार की सहमति का। यानी अंगूर के साथ अब लीची से बनी शराब भी बाजार में उपलब्ध होगी। लीची प्रसंस्करण के बड़े व्यवसायी लीचिका इंटरनेशनल के संचालक केपी ठाकुर ने शराब निर्माण के लिए पहल शुरू की है। लीची अनुसंधान केन्द्र से तकनीकि सहयोग लेने के बाद लाइसेंस के लिए बिहार सरकार के पास प्रस्ताव गया है। वहां से सहमति मिलते ही उत्पादन शुरू हो जाएगा।

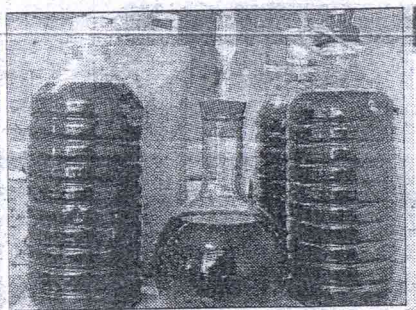

लीची अनुसंधान केंद्र में लीची से बनी शराब

वर्ष	उत्पादन मीट्रिक टन
2007-08	223.2
2008-09	216.9
2009-10	215.1
2010-11	227.0
2011-12	236.4
2012-13	254.6
2013-14	234.2

लीची का फल बर्बाद न हो इस उद्देश्य को लेकर शोध जारी है। विभिन्न प्रसंस्कृत उत्पाद व उसकी उपलब्धता अधिक दिनों तक बढ़ाने से किसानों को ज्यादा मूल्य एवं लोगों को रोजगार मिलेगा। किसान व उद्यमी को नई तकनीक से अवगत कराने का काम चल रहा है। शराब के लिए कई उद्यमी सामने आए हैं।

-डॉ. सुशील कुमार पूर्वे
प्रधान वैज्ञानिक लीची अनुसंधान केंद्र मुजफ्फरपुर

'जागरण सही मायने में पत्र ही नहीं, मित्र भी'

मुजफ्फरपुर : दैनिक जागरण में लीची को लेकर छपी खबर के बाद लीची अनुसंधान केंद्र में फोन कॉल कर सुझाव लेने की होड़ लगी रही। शनिवार को करीब डेढ़ सौ किसानों ने केंद्र के निदेशक डॉ. विशालनाथ से बातचीत कर सलाह ली। उन्होंने कहा कि दैनिक जागरण समाचार पत्र ही नहीं, किसानों का मित्र भी है। मोतिहारी, बेतिया, मुजफ्फरपुर के कृषि विभाग और आत्मा के सहयोग से जागरुकता पर्चा किसानों में बांटा जाएगा।

इसका स्वाद होगा बेहतर

अनुसंधान केन्द्र के मुताबिक लीची को अंगूर या अन्य दूसरे पदार्थ के साथ मिलाकर शराब बनाई जा सकती है। लीची में 11 प्रतिशत अल्कोहल रहता है। इसके रस को ईस्ट की सहायता से किण्वित करके उत्पाद तैयार किया जाता है। इसका स्वाद भी बेहतर होगा।

लीची उत्पादन का ग्राफ

बिहार लीची के उत्पादन में सबसे अग्रणी राज्य है। यहां लगभग 31 हजार हेक्टेयर में इसकी खेती होती है। यह देश में लीची उत्पादन का लगभग पचास प्रतिशत भागीदारी है। वर्ष 2013-14 में देश में पांच लाख 85 हजार 300 टन लीची का उत्पादन हुआ, जिसमें बिहार में अकेले 2 लाख 34 हजार 200 टन उत्पादन दर्ज हुआ है।

किसानों की समस्या

लीची उत्पादक किसान सदातपुर बैरिया के शंभूनाथ चौबे ने कहा कि पिछले साल फसल बर्बाद हुई। उसका राज्य सरकार की ओर से सर्वे नहीं कराया गया। लीची अनुसंधान केन्द्र या कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक बाग में नहीं आए। किसानों को मदद मिलनी चाहिए।

लस्करीपुर के कैलाश प्रसाद ने कहा कि बाजार की कमी के कारण लीची उत्पादक किसानों को बेहतर दाम नहीं मिलता। कृषि विभाग बाजार उपलब्ध कराने की दिशा में पहल करे।

छपरा कांटी के किसान बालकृष्ण सिंह उर्फ नथूनी सिंह ने कहा कि लीची कम दिन की फसल है। इसलिए सरकार को चाहिए कि वह इसका बीमा कराए तथा इस साल जो लीची की क्षति हुई है उसका मुआवजा किसानों को दे।

इस हेल्पलाइन पर बताएं किसान

अगर आपको लीची विस्तार की जानकारी लेनी हो तो लीची अनुसंधान केंद्र के निदेशक के मोबाइल फोन नंबर 9431813884 पर संपर्क कर सकते हैं। इसकी खेती में आपको उपलब्धि हो या कोई समस्या हो तो दैनिक जागरण के मोबाइल नंबर 9431270044 पर बताएं। आपकी समस्या को प्रमुखता से प्रकाशित करने के साथ संबंधित अधिकारी तक पहुंचाया जाएगा और उसका निदान होगा।